राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 155
सम्मोहन
नागराज

नागराज की कई घातक शक्तियों में से एक है, उसकी सम्मोहन शक्ति! और यह शक्ति आमतौर पर सभी नागों में कम या ज्यादा मात्रा में पाई जाती है। सम्मोहन का अर्थ हमेशा जादू-टोने से जोड़ा जाता रहा है। परन्तु सम्मोहन का असली संबंध तो इच्छाशक्ति से है। सम्मोहन करने वाले की इच्छाशक्ति दूसरे पर इस तरह से हावी हो जाती है कि वह वही करता है, और देखता है, जो सम्मोहक करना या दिखाना चाहता है। ... सम्मोहन का संबंध जादू-टोने से चाहे न हो, पर मानसिक शक्तियों से जरूर है। क्योंकि तीव्र सम्मोहन के अन्दर दुनिया और ब्रह्मांड को हिला सकने लायक मानसिक शक्ति होती है। और जो इस मानसिक शक्ति का इस्तेमाल करने का तरीका खोज निकालते हैं, वे सारी दुनिया पर फैला सकते हैं ...
सम्मोहन
संजय गुप्ता की पेशकश
लेखक: जॉली सिन्हा, चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले, विनोद कुमार
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता
मुझे भगाने की कोशिश करना बेकार नागराज! नागू तभी वापस जाएगा, जब उसका काम हो जाएगा। बेकार अपनी मौत को मत बुलाओ!
महा सम्मोहक करणवशी के रहते नागराज का कुछ नहीं बिगड़ेगा इच्छाधारी नाग!
इसकी मणि प्राप्त करने की कोशिश करो नागराज! इस मणि में इसकी जान भी बसती है, और तुम्हारी इच्छाशक्ति तक को वश में कर लेने वाली सम्मोहन शक्ति भी!

महानगर की आबादी एक करोड़ की है! और बाहर से यहां रोज काम करने आने वालों की संख्या लगभग चार लाख है-
इसलिए किसी भी कलाकार के लिए अपनी कला का प्रदर्शन करने की इससे बेहतर जगह हो ही नहीं सकती-
ओ भारती! तुम जानती हो कि मुझे भीड़-भाड़ में रहना पसन्द नहीं है! और ऐसे गाने, डांस, जादू-तमाशे के प्रोग्रामों में मुझे जरा सी भी दिलचस्पी नहीं है! मैं... मैं बोर हो जाता हूं!...
KAMLA AUDITORIUM
जादूगर राम
तुम्हारी यही तो प्रॉब्लम है राज! सिर्फ समस्याएं... अपराध और आतंकवाद के अलावा तुम और कुछ करते ही नहीं! और इन्सान की जिन्दगी के और भी पहलू होते हैं! और उन पहलुओं में सबसे जरूरी पहलू है मनोरंजन! एक बार शो देखो तो सही! फिर तुमको पता चलेगा कि तुम क्या मिस कर रहे थे!...
...शायद इससे तुम जिन्दगी को दूसरे नजरिए से देखने लगो नागराज! और मुझे भी!
ऐसे जादू के शो तो बहुत ज्यादा बोरिंग होते हैं! जादू के नाम पर हाथ की सफाई दिखाते हैं। जबकि मैं तो ऐसे-ऐसे जादू देख चुका हूं, जिनको देखकर इन सभी दर्शकों की या शायद इस जादूगर की धड़कन रुक जाए!
ये जादूगर वैसा नहीं है-ओस्ताद! हालांकि इसका नाम पहली बार सिर्फ दो महीने पहले सुना गया था लेकिन लोगों का कहना है कि करणवशी जादूगर सचमुच जादू दिखाता है! हाथ की सफाई नहीं! इसका शो जो देखने वाले इसकी ऐसी तारीफें करते हैं, जैसे इसके गुलाम हों!
ऐसा है तो देख लेते हैं! पर वादा करो, मेरे एक बार कहते ही यहां से चल दोगी!
क्योंकि राज सिर्फ तभी तक बैठा रह सकता है जब तक नागराज का कहीं से बुलावा नहीं आ जाता!
प्रॉमिस! अब टेंशन छोड़ो और शो का मजा लो!

सभी दम साधे करणवशी के स्टेज पर प्रकट होने का इन्तजार कर रहे थे-
लेकिन करणवशी के बजाय, स्टेज पर कुछ और आकर गिरा-
मेरी कला के प्रशंसको! मेरे फन के गुलामों! यानी मेरे दर्शकों...
...दुनिया जानती है, और कहती है कि गुजरा हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता! इंसान बड़ी उम्र से छोटी उम्र में वापस नहीं जा सकता! मरकर वापस नहीं आ सकता!
यानी कंकाल से जिन्दा इंसान नहीं बन सकता! पर आप देख रहे हैं। और मैं कह रहा हूं, वक्त को वापस लौटाया जा सकता है!
कंकाल से जिन्दा इंसान बन सकता है! लेकिन तभी जब उस कंकाल को बनाने वाला हो जादूगरों का शहंशाह... करणवशी!

कैसा लगा तुम्हें नागराज! क्या ग्रैंड फिनाले था करणवशी का, पर ये ट्रिक उसने की कैसे होगी? वह तो टूटे कंकाल से जिन्दा इन्सान में बदल गया!
कैसी ट्रिक भारती? वह तो चुपचाप अकड़ा खड़ा हो गया! कुछ धुंए ने धुंआ-लावा जरूर मारे! पर उसमें तो कुछ भी ग्रैंड नहीं था!
क्या बात कर रहे हो राज? पहले कंकाल के टुकड़े गिरे, फिर कंकाल जुड़ा, फिर कंकाल पर नसें, मांस और खाल चढ़े, और फिर जीता-जागता करणवशी बन गया!
तुम तो गए थे क्या? खैर, अब देखो, करणवशी आगे क्या करता है! पर एक बात तो माननी पड़ेगी! करणवशी सचमुच का जादू जानता है!
भारती क्या कह रही है? मैं तो लगातार शो देख रहा हूं! मुझे कुछ क्यों नहीं दिखा?
मेरे शो की शुरुआत को पसन्द करने के लिए धन्यवाद पर मौत और मौत से वापस जिन्दगी की तरफ आने के बीच मैंने कुछ देखा! मुझे तो वह देखने के लिए मरना पड़ा! पर आप लोग उसे मरे बिना ही देख सकते हैं!
और वह नजारा है, नर्क का नजारा!

अगले ही पल हर दर्शक की आंखें फैल गईं! पहले आश्चर्य से! और फिर भय से–
य... यह हम कहां आ गए हैं?
ये तो सचमुच नर्क लग रहा है!
पर... मैं तो स्वर्ग-नर्क मानता ही नहीं हूं!
क्योंकि न जाने कैसे पूरा ऑडिटोरियम, नर्क का रूप धारण करता जा रहा था
हा हा हा! यहां पर तुम्हारे पापों का हिसाब होगा, मानवों! हर पाप के लिए एक अलग सजा! सदियों तक तड़पोगे तुम लोग!
ये तो यमदूत लग रहे हैं! क्या हम मर गए हैं?
पापों का हिसाब मरने के बाद ही होता है!
मैं तो जला! आह!
भारती पर भी बुरी गुजर रही थी–
बचाओ! मुझे इस यमदूत से बचाओ नागराज! यह मुझे आग में जलाने जा रहा है! पर... पर तुम तो खुद यमदूत के शिकंजे में हो! तुम मुझे कैसे बचाओगे?
यह सच नहीं हो सकता! मैं जरूर कोई सपना देख रही हूं!
चोट तो सचमुच में लग रही है! यह जादू नहीं हो सकता!
बचाओ! बचाओ, करणवशी! ये तुम हमको कहां ले आए हो?
नागराज! वह कौन है? तुमको अगर कोई बचा सकता है तो सिर्फ मैं!
महान जादूगर करणवशी!

नागराज!
मुझे बचाओ! मैं जल रही हूं!
भारती!
क्या हुआ भारती! तुम चिल्ला क्यों रही हो?
भारती के कानों तक मेरी आवाज नहीं पहुंच रही है! साथ ही साथ ऑडिटोरियम में बैठे लगभग सारे दर्शक कुछ न कुछ चिल्ला रहे हैं! बात कुछ और ही है! मुझे पता लगाना ही होगा कि भारती के साथ-साथ ये सब भी ऐसा क्या देख रहे हैं, जो इनके होश फाख्ता किए हुए है! पर यह कैसे पता चलेगा कि भारती क्या देख रही है?
मुझे भारती के मस्तिष्क में घुसने का प्रयत्न करना होगा!
सर्पों से तो मेरा मानसिक संपर्क हमेशा ही बना रहता है! मैं सूक्ष्म रूप में अपने विशेष नाग सर्पिष्क को भारती के शरीर में प्रवेश कराता हूं! यह भारती के रक्त के साथ बहकर इसके मस्तिष्क तक पहुंचेगा, और फिर मेरे पास उस घटनाक्रम के मानसिक संकेतों को प्रेषित करेगा जो इस वक्त भारती के दिमाग में चल रहा है।...
...और सर्पिष्क चूंकि मेरे शरीर में पैदा हुआ सर्प न होकर नागद्वीप का सर्प है, इसी कारण यह बगैर मेरे विष के भी जीवित रह सकता है।

भारती की रक्त धमनियों से होता हुआ सर्पिष्क भारती के मस्तिष्क की भूल-भुलैया में जा पहुंचा-
और 'विद्युत स्फुलिंगों' के रूप में भारती के दिमाग में बह रही विचार तरंगों का संपर्क नागराज के मस्तिष्क में जोड़ने लगा-
भारती के दिमाग में उभर रहे दृश्य नागराज के दिमाग में भी उभरने लगे-
और नागराज चौंक उठा-
ओह! करणवशी जादू दिखाने के लिए सम्मोहन का प्रयोग कर रहा है। और सम्मोहन के जरिए वह इन दर्शकों को भयभीत करने वाले दृश्य दिखा रहा है!
इसीलिए मुझे न तो करणवशी का 'डेंड एपियरेंस' दिखाई पड़ा, और न ही नर्क के ये दृश्य क्योंकि मुझको सम्मोहित कर पाने की क्षमता करणवशी के पास नहीं है! पर करणवशी दर्शकों को खुश करने के बजाय भयभीत क्यों कर रहा है?
★स्फुलिंग यानी चिंगारियां (SPARK)
खैर! अभी यह सोचने का वक्त नहीं है! किसी कमजोर दिल वाले की हृदय गति भी रुक सकती है! मुझे इसके सम्मोहन को काटना होगा! और वह भी चुपचाप! वरना करणवशी को राज की सम्मोहन शक्ति देखकर शक हो सकता! और उससे मेरा भेद खुल सकता है। एक दूसरा रास्ता है!
अभी करणवशी का मस्तिष्क सम्मोहन तरंगों के जरिए भारती के मस्तिष्क से जुड़ा हुआ है! और भारती का मुझसे! यानी मैं भारती के दिमाग के जरिए करणवशी के दिमाग तक पहुंच सकता हूं!

अगले ही पल नागराज की आंखों से सम्मोहन तरंगें निकलकर भारती की आंखों से टकराईं-
और फिर वे तरंगें करणवशी की उन सम्मोहन तरंगों को नष्ट करती आगे बढ़ने लगीं जिनका संपर्क भारती से था-
नागराज की सम्मोहन तरंगों के करणवशी के मस्तिष्क में घुसते ही करणवशी के मस्तिष्क को एक जोरदार झटका लगा-
और करणवशी के मस्तिष्क का वह भाग कुछ पलों के लिए सुन्न हो गया, जो सम्मोहन पैदा कर रहा था-
साथ ही साथ- वह सम्मोहन-जाल भी छिन्न-भिन्न हो गया, जो दर्शकों को भयावह दृश्य दिखा रहा था-
ओह! हम तो वापस ऑडिटोरियम में आ गए!
बच गए!
जान बची तो लाखों पाए!
अब भागो यहां से!
य... यह क्या? मेरा जादू टूट गया! किसी ने मुझ पर "विपरीत सम्मोहन तरंगों" से वार किया है! पर किसने? इतना शक्तिशाली सम्मोहन इन दर्शकों में से किसके पास है! किसके पास?
ठहरो! रुक जाओ! आयोजन! अभी तो बहुत सारे जादू बचे हैं!
मेरे ख्याल से मेरी जिन्दगी भी अभी थोड़ी सी बची है! अगर यहां पर रुका तो वह शायद नहीं बचेगी!
अजी चलो! इसके मुंह क्यों लग रहे हो? इसने तो जीते जी यमदूतों से पिटवा दिया!
मैं... मैं नर्क में कैसे चली गई थी राज? और फिर वापस कैसे आ गई?
बताऊंगा भारती! फिलहाल तो इस भीड़ के साथ-साथ तुम भी यहां से बाहर निकलकर घर चली जाओ! मैं किसी को समझाकर अभी आता हूं!

करणवशी क्रोध से उबल रहा था-
किसी ने मेरे काम में व्यवधान पहुंचाया है! और उसके पास तीव्र सम्मोहन शक्ति है! मुझे उसको ढूंढना ही होगा! एक तो दंड देने के लिए और दूसरे उसकी सम्मोहन शक्ति को अपने काम में लाने के लिए! वह इसी भीड़ में कहीं है! मुझे इस भीड़ को यहीं पर रोक कर उसे ढूंढना होगा!
इस भागती भीड़ को सम्मोहित करना जरा मुश्किल काम है! लेकिन यहां पर और भी जीवित वस्तुएं मौजूद हैं! और हर जीवित वस्तु के अंदर दिमाग या दिमाग जैसा कोई और संचलन केंद्र तो होता ही है, जिसे सम्मोहित किया जा सकता है!
जीवित वस्तुएं जैसे वायरस, बैक्टीरिया और अन्य अति सूक्ष्म जीव!
करणवशी की आंखों से निकलकर सम्मोहन तरंगें हवा में तैरने लगीं-
और हवा में मौजूद करोड़ों सूक्ष्म प्राणी एक-दूसरे से जुड़कर एक भयानक रूप धारण करने लगे-
बाहर जाने के रास्ते पर ये... यह क्या चीज आ गई है? ये तो जैसे हवा में प्रकट हो रही है!
यह करणवक्री का जादू है! रुको मत! भागते रहो! यह भी कोई असली चीज नहीं, बल्कि यमदूत जैसी काल्पनिक चीज है!
लेकिन आगे बढ़ते ही सबको पता चल गया कि वह वस्तु काल्पनिक नहीं थी-
हा हाहा! अब कहां भागोगे! भागो, भागो! कोशिश करो!
तब तक ऐसे और चार पांच प्राणी बना डालता हूं!
बाहर जाने का हर रास्ता रोकने के लिए...

करणवशी पर हमला करने की जुर्रत किसने की ? किसकी हिम्मत हुई उसका 'सम्मोहन ध्यान' भंग करने की ?
ओह, नाम तो कुछ सुना-सुना सा लग रहा है ! कहां सुना है ? हां, याद आ गया... पर तूने मुझ पर हमला क्यों किया ?
उसके लिए मुझे खेद है। दरअसल तुमको रोकने का और कोई रास्ता मेरी समझ में नहीं आया.
रोकेगा ? तू मुझे रोकेगा ? महान तन्त्रिक करणवशी को ? पहले तू मेरे इस प्राणी को रोकले।
...और अगर जिन्दा बच सका तो अपनी यह इच्छा भी पूरी कर लेना.

आह! एक काम किया जा सकता है।

और नहीं भी था, वहां से इस नर्तकी को अजगरों के हाथ से और सुखजीवियों की कैद से आजाद कर सकता था-
यहां पर भी है, मैंने अंदर आते समय पर लगे कई "अग्निशामक यंत्रों" को देखा था, पर फिलहाल तो मैं कुछ देख नहीं पा रहा हूं, मुझे अनुमान से ही उस दिशा में बढ़कर उस स्थान तक पहुंचना है, जहां पर ये यंत्र लगे हुए हैं
नागराज को अपनी सर्प-इंद्रियों का इस्तेमाल करने में ज्यादा समय नहीं लगा-
ये तो अग्निशामक यंत्र
जो आग को बुझाने में
कोई भी जीवाणु या विषाणु ज्यादा ठंड में जिन्दा नहीं रह सकता!
नागराज के चक्कर में मेरा ध्यान भटक गया, और नर्तकी को बाहर जाने का मौका मिल गया
अब मुझे भी यहां से निकल जाना चाहिए.
और नागराज आजाद हो गया-
आक्का
नाग.

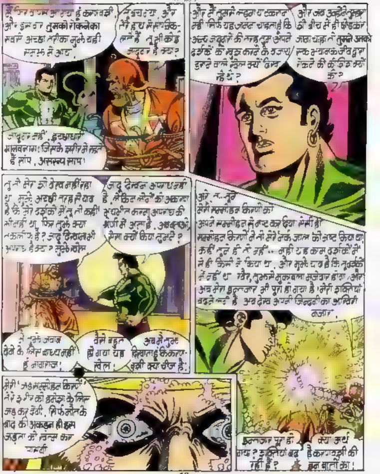
तुमको रोकने का सबसे अच्छा तरीका मुझे यही समझ में आया.
और हाथ में सांप निकलते हैं. तू भी कोई जादूगर है क्या?
जादूगर नहीं, इच्छाधारी नागराज! जिसके शरीर में रहते हैं सांप, असंख्य सांप।
और मैं तुमसे लड़ना नहीं सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि अन्य जादूगरों की तरह तुम अपने दर्शकों का मनोरंजन करने के बजाय डराने वाले खेल क्यों दिखा रहे थे?
और जब उन्होंने मुझको बीच में ही छोड़कर जाना चाहा तो तुमने अपने एक भयानक जीव द्वारा रोकने की कोशिश क्यों की?
जादू दिखाना अपराध नहीं है, लेकिन लोगों को आतंकित करना अपराध की श्रेणी में आता है. अब बताओ, ऐसा क्यों किया तुमने?
मैं तुम्हें जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हूं नागराज!
वैसे बहुत हो गया यह खेल!
अब मैं तुम्हें दिखाता हूं कि कारण वशी क्या चीज है!
अरे. न.. तूने मेरी सम्मोहन किरणों को अपने सम्मोहन से नष्ट कर दिया.
सम्मोहन किरणों ने तो मेरे तर्क जाल को नष्ट किया था.
और मुझे पता है कि तू दर्शकों में नहीं था.
खैर, तुमसे मुकाबला मजेदार होगा. और अब मेरा इन्तजार भी पूरा हो गया है। मेरी शक्तियां बढ़ते गई हैं. अब देख अपनी जिन्दगी का आखिरी नजारा.
मेरी 'जड़ सम्मोहन किरणें' तेरे शरीर को हमेशा के लिए जड़ कर देंगी. सिर्फ मौत के बाद की अकड़न ही इस जड़ता को खत्म कर पाएगी.
इन्तजार पूरा हो गया? शक्तियां बढ़ रही हैं?
क्या अर्थ है कारणवशी की इन बातों का?

शक्ति इच्छाशक्ति! बहो मेरे शरीर में, शक्ति दो मुझे...
...शक्ति...
धाड़
आऽऽह! इतना भयंकर वार...
इसकी शक्तियां बढ़ रही हैं, कहीं से इसको शक्ति प्राप्त हो रही है, पर कहां से?
खैर! कहीं से भी प्राप्त हो रही हो, यह बाद में सोचूंगा,
अभी तो इस पर जल्दी से जल्दी काबू पाना ज्यादा जरूरी लग रहा है.
आह, यह क्या छोड़ा है तूने मुझ पर? मेरा सर चकरा रहा है...
इसे विषफुंकार कहते हैं करणवशी! मैं तेरे वार का जवाब उतने ही शक्तिशाली वार से दे सकता था.. ..पर मैं
खामख्वाह की हिंसा में यकीन नहीं करता!
अब मैं तेरी सम्मोहन शक्ति को ही अपनी सम्मोहन किरणों द्वारा खींच लूंगा.

आऽऽऽह!
...नहीं होने दूंगा.
तू ने सचमुच मेरी सम्मोहन शक्ति खींच ली है. मेरी सम्मोहन शक्ति बहुत शक्तिशाली है. तू मुझे शक्तिहीन कर देगा, पर मैं ऐसा नहीं होने दूंगा...
आऽऽह. अब... अब यह मुझ पर मानसिक शक्ति का वार कर रहा है. इसकी शक्तियां तो बढ़ती जा रही हैं. पहले इसने सर्प बंधनों को तोड़ डाला फिर मुझ पर अविश्वसनीय शक्ति से वार किया और अब ये मानसिक वार. कहां से मिल रही हैं इसको ये शक्तियां?
अगर करपवड़ी नागराज की शक्तियों से अपरिचित था, तो नागराज को भी करपवड़ी की शक्तियों का अनुमान नहीं-
मैं बेकार ही उस दूसरे शख्स को ढूंढ रहा था, जिसमें अजीब सम्मोहन शक्ति है. जब तू मेरे सामने है ही तो मुझे उसकी क्या जरूरत है. जैसे तू मेरी सम्मोहन शक्तियां सोख रहा था, वैसे ही मैं भी तेरी सम्मोहन शक्ति सोख सकता हूं:
और यह काम मैं तेरा सिर चकनाचूर होने से पहले ही कर लूंगा, ताकि तू मेरा प्रतिरोध कर ही न पाए।
नागराज ने खुद ही करपवड़ी को यह आइडिया दिया था-

और अपनी बढ़ती हुई शक्तियों के सहारे करणवशी नागराज के मस्तिष्क में बसी हुई उसकी सम्मोहन शक्ति खींचता जा रहा था-
हाहाहा! सम्मोहन शक्ति मिल तो रही है, पर थोड़ी सी! इसके दिमाग के अंदर तक घुसना होगा, ताकि मैं जल्दी-जल्दी इसकी शक्ति सोख सकूं!
और उसकी अपनी खोज एकाएक समाप्त कर देनी पड़ी-
एक चीख के साथ
आऽऽह.. ट.. यह क्या? मुझे एक बहुत तेज झटका लगा है. मेरे दिमाग की कोशिकाएं बुरी तरह से थरथराने लगी हैं. कोई शक्ति इसके मस्तिष्क के अन्दर बैठी, इसके मस्तिष्क की सुरक्षा कर रही है. मुझे यह खोज रोकनी होगी, वरना मैं पागल हो जाऊंगा
वरना अगर कहीं इसने अपने-आपको संभाल लिया, तो फिर मेरी खैर नहीं!
करणवशी नागराज के मस्तिष्क के अन्दर, सम्मोहन शक्ति का केन्द्र ढूंढने के लिए घुसता चला गया-
तू बहुत शक्तिशाली है नागराज, पर अगर मैं तेरी शक्तियां हासिल न कर सका तो उनके साथ तुझको भी जिन्दा नहीं रहने दूंगा.
क्योंकि एक ही म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं. एक ही दुनिया पर सम्मोहन शक्ति वाले दो तत्व नहीं रह सकते.
करणवशी दरअसल नागराज की इच्छाधारी शक्ति के उस केन्द्र को छेड़ बैठा था, जो उसकी सम्मोहन शक्ति के केन्द्र की भी रक्षा करता था
आऽऽह! करणवशी भाग रहा है! पर भागते-भागते वह मुझ पर एक किरण छोड़ता जा रहा है. क्या असर हो सकता है इस किरण का?
तुझको मारने की मेरी कोशिशें शायद नाकाम रहीं. पर मैं ऐसा इन्तजाम करके जा रहा हूं...
...कि तेरी मौत का कारण वही बनें, जिनको बचाने के लिए तू मुझसे टकरा गया था!

महानगर में फैले जासूस सर्पों तक नागराज का आदेश पहुंचने लगा–
अभी उनको करणवशी को ढूंढ निकालने का आदेश भेज देता हूं!
…और बालकनी में बैठे दर्शकों को नीचे उतरने का रास्ता शायद अब मिला
ओह, मैं ने धमाके रास्ते … आ गया, परन्तु अभी कई दर्शक अन्दर ही हैं…
AUDIT IUM

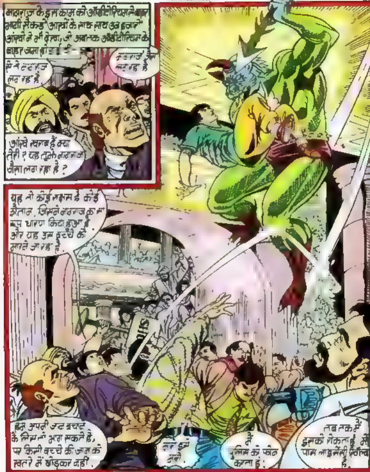
महाराज के इस काम को ऑडीटोरियम में अभी सैकड़ों आँखों के साथ-साथ उन हजारों आँखों ने भी देखा, जो अब तक ऑडीटोरियम के बाहर जमा हो गई थीं
आंखें खराब हैं क्या तेरी ? यह तुझे महाराज जैसा लग रहा है ?
यह तो कोई राक्षस है कोई शैतान, जिसने महाराज का रूप धारण किया हुआ है और यह इन बच्चों को मारने जा रहा है.
हम अपनी जान बचाने के लिए तो भाग सकते हैं, पर किसी बच्चे की जान को खतरे में छोड़कर नहीं.
मैं पुलिस को फोन करता हूं.
तब तक मैं इसको रोकता हूं, मेरे पास लाइसेंसी रिवॉल्वर है.

चक्कर कुछ भी हो, मुझे इनको रोकना होगा, क्योंकि इनके हमले से मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पर ये बच्चा घायल हो सकता है.
मेरे सर्प भीड़ पर हमला तो नहीं करेंगे, लेकिन इनकी उपस्थिति ही भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पर्याप्त होगी!
बच्चा आजाद हो गया है.
इससे पहले कि ये सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचायें, मुझे इनको रोकना होगा.
होगा.
मैं अभी इसके सीने में सारी गोलियां उतार देता हूं.

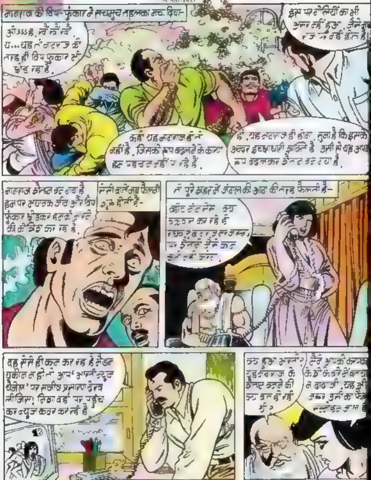
नागराज की विष-फुंकार ने सचमुच तहलका मचा दिया-
इस पर गोलियों का भी असर नहीं हुआ, जैसे नागराज पर नहीं होता है।
ऑऽऽऽह, न... न... न... य... यह तो नागराज की तरह ही विष फुंकार छोड़ रहा है।
कहीं यह नागराज ही तो नहीं है, जिसके रूप बदलने के कारण हम पहचान नहीं पा रहे हैं।
हाँ, यह नागराज ही होगा, सुना है कि इसके अन्दर इच्छाधारी शक्ति है। अभी से यह अपना रूप बदलकर कैसल बन गया है।
नागराज कैसल बन गया है, हम पर घातक वार और विष फुंकार छोड़कर हमको मारने की कोशिश कर रहा है।
ये सारी बातें जब फैलती हैं-
तो पूरे शहर में जंगल की आग की तरह फैलती है-
वह ऐसे ही कत्ल कर रहा है, लेकिन यकीन न हो तो आप अपने न्यूज चैनेल पर सजीव प्रमाण देख लीजिए। रिपोर्टर वहाँ पर पहुँच कर न्यूज कवर कर रहे हैं।
क्या हुआ मालिक? नागराज के कैसल बनने की क्या बात हो रही है?
तेरे आपको क्या पता नगराज ...

भारती ने टी॰वी॰ पर 'भारती न्यूज़ चैनल' को सेट किया, और उसकी आँखें आश्चर्य से फैलती चली गईं-
क्योंकि टी॰वी॰ पर नागराज का जो रूप दिख रहा था-
रुक जाओ, नागमानव, और अपने-आपको हमारे हवाले कर दो।
नागमानव? क्या तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो ए॰ सी॰ पी॰ विष्णु? मैं नागराज हूं!

अब तुम नागराज में एक तरह बन गए हो, तुम्हारे अंदर छिपा शैतान आज बाहर निकल आया है। वर्ना इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके न तुम ये भयंकर रूप धारण करते, और न ही भोले-भाले नागरिकों पर अपनी नागशक्तियों से हमला करते.
और अगर मेरी बातों को तुम झूठ साबित करना चाहते हो तो बदल लो अपना यह रूप, और बन जाओ अपने असली रूप में
यकीन नहीं आता तो देखो अपना वह भयंकर चेहरा, जो शैतान के दिल को भी हिला दे
संभल जाओ नागराज! मेरे वही पुराने दोस्त बन जाओ जो अपराधियों को खुद बखुद मेरे लॉकअप तक आने को मजबूर कर देता था
विष्णु क्या बके जा रहा है? क्या हुआ है मेरे चेहरे को? कहीं यह करणवशी के अंतिम किरण वार का असर तो नहीं है.
शायद वह सम्मोहन किरण थी, जो इन लोगों को मेरा रूप दिखा रही
और अगर ऐसा है तो मुझे इस शीशे में अपना असली चेहरा ही दिखेगा, क्योंकि इस दुनिया का कोई भी सम्मोहन नागराज को सम्मोहित नहीं कर... अरे!
य... यह क्या? मुझे अपने चेहरे के स्थान पर किसी भयंकर नाग का चेहरा दिख रहा है यह कैसे हो सकता है? यानी यह सम्मोहन नहीं है.
करणवशी की धमकी खोखली नहीं थी, वह सचमुच ऐसा इन्तजाम करके गया है कि मेरी तलाश में रहने वाले ही मेरी जान लें, पर मैं इस षड्यंत्र को सफल होने नहीं दे सकता.
मैं अपने आपको पुलिस के हवाले नहीं कर सकता, मुझे करणवशी को ढूंढना होगा! और उससे इस जादू की काट लेकर अपने सामान्य रूप में आना होगा!
वर्ना महानगर की जनता मेरी ही जान ले लेगी.
और करणवशी को रोकने वाला कोई नहीं रहेगा। न जाने क्या करना चाहता है वह

अगले ही पल एक रॉकेट नागराज की तरफ लपक पड़ा-

सिपाहियों को बांध सकी
ओह, इनकी बुलेटप्रूफ जैकेटें
धागे का
धम्म
ओह, मैं

कब तक फुंफकार छोड़ोगे नागराज? हम ग्रेनेड छोड़ते रहेंगे, और तुम फुंफकार छोड़कर अपना विष कम करते रहोगे! और थोड़ी ही देर में तुम इतने कमजोर हो जाओगे कि हम तुमको पिटारी में बन्द कर लें!
विष्णु ठीक कह रहा है; बचाव करके मैं सिर्फ अपना समय और शक्ति ही व्यर्थ करूंगा. मुझे खुद भी हमला करना होगा, लेकिन वह हमला ऐसा होना चाहिए जिससे इनको नुकसान न पहुंचे, और ऐसा तरीका सोचने के लिए मुझे वक्त चाहिए क्योंकि मेरी कोई भी शक्ति इनको नुकसान पहुंचाएगी ही पहुंचाएगी।
हम इसके लिए भी तैयार हैं, इससे पहले कि ये पूरी तरह से अदृश्य हो जाए...
फिलहाल इच्छाधारी कणों में बदलकर अदृश्य हो जाता हूं, ताकि मैं कोई तरीका आराम से सोच सकूं.
ओफ, ये तो हर बार मुझसे एक कदम आगे निकल आ रहे हैं. इस वाली गोंद से ढके होने के कारण मैं अपने इच्छाधारी कणों को धुएं की तरह हवा में बिखेर नहीं सकता; मुझे अपने असली रूप में आना ही पड़ेगा.
धप
इसके अपने कपड़े हैं तो भी
माना कि ये गोंद वाटरप्रूफ है, विष्णु, पर इससे छूटने के और भी तरीके हैं.
मैं अपनी कलाई पर से गोंद को हटाकर अपने सर्प-मेरे निकलने लायक जगह बना सकता हूं!

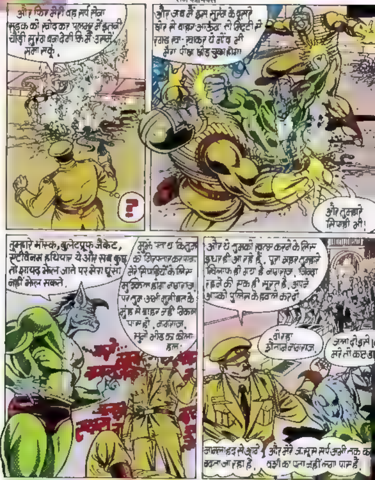
और फिर मेरी वह सर्प सेना सड़क को खोदकर पलभर में इतनी चौड़ी सुरंग बना देगी कि मैं उसमें समा सकूं.
और जब मैं इस सुरंग के दूसरे छोर से बाहर आऊंगा तो सिटी से ... मेरा पीछा छोड़ चुका होगा
?
और तुम्हारे सिपाही भी!
तुम्हारे मॉस्क, बुलेटप्रूफ जैकेट, स्टेनलेस हथियार ये और सब कुछ तो शायद झेल जाते पर मेरा घूंसा नहीं झेल सकते.
मुझे पता था कि तुम को गिरफ्तार करना मेरे सिपाहियों के लिए मुश्किल होगा नागराज, पर तुम अभी मुसीबत के मुंह से बाहर नहीं निकल पाए हो, नागराज. मुझे भीड़ का खेल हाल.
और ये तुमको खत्म करने के लिए इधर ही आ रहे हैं. पूरा शहर तुम्हारे खिलाफ हो गया है नागराज. जिन्दा रहने की एक ही सूरत है. अपने आपको पुलिस के हवाले कर दो
वो रहा हैवान नागराज.
जला दो इसे
आसपास हद से ज्यादा बढ़ता जा रहा है.
और मेरे जासूस सर्प अभी तक
का पता नहीं लगा पाए हैं.

मुझे कार्टवर्ती का पता जल्दी से जल्दी लगाना होगा ! और इसके लिए अब मुझे अपने सर्पों के साथ-साथ भारती कम्युनिकेशंस की भी मदद लेनी होगी ! जिसके रिपोर्टर महानगर के हर कोने में मौजूद हैं .
रुक जाओ नागराज, मेरे सिपाही बेहोश हो गए तो क्या, मैं तो अभी होश में हूं ! मैं तुमको भागने नहीं दूंगा !
आऽऽह, यह जरूर 'एंटी-पॉयजन' इंजेक्शन होगा .
नहीं विष्णु, तुम पर वार करके मुझे कोई खुशी नहीं होगी; परन्तु मुझे रोककर तुम कार्टवर्ती की मदद कर रहे हो . और अपना नुकसान
और मैं तुम्हारा नुकसान कभी नहीं होने दे सकता
तड़ाक
न्यूज चैनल पर लगातार नजर गड़ाए हुए भारती भी सोच में डूब गई-
क्या विशा का कहना सच है ? नागराज क्या सचमुच नागराक्षस बन गया है ? क्योंकि अगर यह सम्मोहन का असर होता तो टी.वी. कैमरा नागराज का असली रूप भी दिखाता . अब इस स्थिति में मैं कैसे निपटूं ? ओह, फोन, यह किसका फोन हो सकता है ? नागराज का ?
जैसा कि आप देख रहे हैं, नागराज अपने पुराने दोस्तों तक पर वार करने में नहीं हिचक रहा है . क्या सचमुच नागराज राक्षस बन गया है ?
दिस इज विशा फॉर भारती न्यूज चैनल .
पर ये फोन नागराज का नहीं था-
फोन करने वाले थे-
इंस्पेक्टर कल्याणकर . हां मैं भारती ; अरे ! आपने भी वह सजीव प्रसारण देख लिया ? आपकी क्या राय है ?

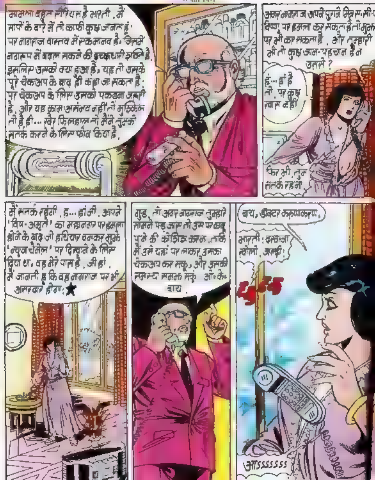
मामला बहुत सीरियस है भारती . मैं सांपों के बारे में तो काफी कुछ जानता हूं . पर नागराज वास्तव में एक मानव है, जिसमें नागरूप में बदल सकने की इच्छाधारी शक्ति है. इसलिए उसको क्या हुआ है, यह तो उसके पूरे चेकअप के बाद ही कहा जा सकता है . पर चेकअप के लिए उसको पकड़ना जरूरी है . और यह काम असंभव नहीं तो मुश्किल तो है ही... खैर फिलहाल तो मैंने तुमको सतर्क करने के लिए फोन किया है ,
अगर नागराज अपने पुराने मित्र ए.सी.पी. विष्णु पर हमला कर सकता है तो मुझ पर भी कर सकता है . और तुम्हारी भी तो कुछ जान-पहचान है न उससे ?
हं... हां है तो . पर कुछ खास नहीं
फिर भी , तुम सतर्क रहना ,
मैं सतर्क रहूंगी . ह... हांजी . आपने 'विष-अमृत' का महानगर पर हमला होने के बाद जो हथियार बनाकर मुझे 'न्यूज चैनल' पर दिखाने के लिए दिया था, वह मेरे पास है . जी हां . मैं जानती हूं कि वह नागराज पर भी असरदार होगा . ★
गुड . तो अगर नागराज तुम्हारे सामने पड़ जाए तो उस पर काबू पाने की कोशिश करना . ताकि मैं उसे यहां पर लाकर उसका चेकअप कर सकूं , और उसकी समस्या समझ सकूं . ओ.के. बाय .
बाय , डॉक्टर कल्याणकरण ,
भारती ! दरवाजा खोलो , जल्दी !
आऽऽऽऽऽऽऽ

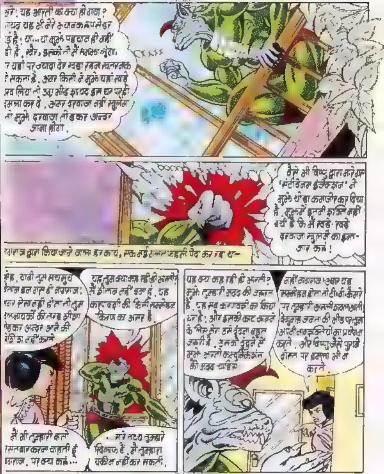
अरे! यह भारती को क्या हो गया? शायद यह भी मेरे भयानक रूप से डर गई है! या... या मुझे पहचान ही नहीं रही है, खैर, इसको तो मैं समझ लूंगा, पर यहां पर ज्यादा देर खड़ा रहना खतरनाक हो सकता है. अगर किसी ने मुझे यहां खड़े देख लिया तो उग्र भीड़ शायद इस घर पर ही हमला कर दे, अगर दरवाजा नहीं खुलेगा तो मुझे दरवाजा तोड़कर अन्दर जाना होगा.
वैसे भी विष्णु द्वारा मारे गए 'एंटीवेनम इंजेक्शन' ने मुझे थोड़ा कमजोर कर दिया है, मुझमें इतनी शक्ति नहीं बची है कि मैं खड़े-खड़े दरवाजा खुलने का इंतजार करूं!
नागराज द्वारा किया जाने वाला हर कार्य, एक नई दहशत पैदा कर रहा था—
यह तुम क्या कह रही हो भारती? मैं शैतान नहीं बना हूं, यह करामात किसी सम्मोहन किरण का असर है.
मैं भी तुम्हारी बातों पर विश्वास करना चाहती हूं नागराज, पर क्या करूं...
... सारे तथ्य तुम्हारे खिलाफ हैं, मैं तुम्हारा यकीन नहीं कर सकती.
यह क्या कह रही हो भारती? मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है, यह सब करामात किसी और का किया धरा है; और इसकी काट जानने के लिए मेरा उसे ढूंढना बहुत जरूरी है. उसको ढूंढने में मुझे तुम्हारी कम्प्यूटर की मदद चाहिए
नहीं नागराज! अगर यह सम्मोहन होता तो टी.वी. कैमरे पर तुम्हारी असली शक्ल आती, बेगुनाह जनता की भीड़ पर तुम अपनी नागशक्तियों का प्रयोग न करते, और विष्णु जैसे पुराने दोस्त पर हमला भी न करते.

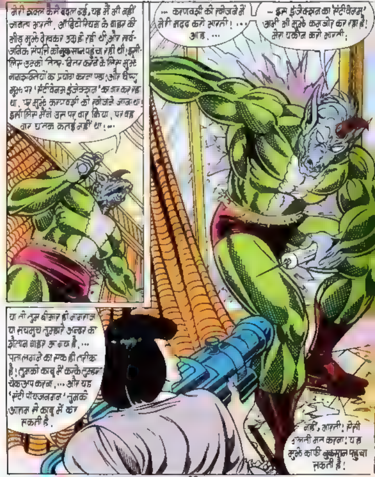
मेरी शक्ल कैसे बदल गई, यह मैं भी नहीं जानता भारती. ऑडिटोरियम के बाहर की भीड़ मुझे देखकर उग्र हो रही थी और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचा रही थी! इसीलिए उनको तितर-बितर करने के लिए मुझे नागशक्तियों का प्रयोग करना पड़ा! और फिर मुझ पर 'एंटीवेनम इंजेक्शन' का असर हो रहा था, पर मुझे करणवशी को खोजने जाना था! इसीलिए मैंने उस पर वार किया, पर वह वार घातक कतई नहीं था!...
... करणवशी की खोजने में मेरी मदद करो भारती! ... आह, ...
... इस इंजेक्शन का 'एंटीवेनम' अभी भी मुझे कमजोर कर रहा है! मेरा यकीन करो भारती!
या तो तुम बीमार हो नागराज या सचमुच तुम्हारे अन्दर का शैतान बाहर आ गया है, ... पता लगाने का एक ही तरीका है! तुमको काबू में करके तुम्हारा चेकअप करना, ... और यह 'एंटी पॉयजनगन' तुमको आसानी से काबू में कर सकती है.
नहीं, भारती! ऐसी नादानी मत करना! यह मुझे काफी नुकसान पहुंचा सकती है!

नागराज, बल्कि तुमको डॉक्टर करुणाकरन
क्लिनिक में पहुंचाएंगी जहां पर
डॉक्टर करुणाकरन तुमको ठीक
करने का तरीका ढूंढेंगे
भारती की उंगली ट्रिगर पर कस गई, और
नागराज के जिस्म पर घातक विषनाशक
की धार नागराज की तरफ लपक पड़ी-
ओह, इधर-उधर हटने की जगह नहीं
है. मुझे इच्छाधारी कणों में बदलना होगा.
प... पर मैं अपने दिमाग को केन्द्रित
ही नहीं कर पा रहा हूं.
म... मुझे
इस धार से बचना
ही होगा.
वर्षों पहले से ही 'एंटीवेनम' से कमजोर
हुए तेरा शरीर, इस विषनाशक की धार
को झेल नहीं पाएगा!
लेकिन इससे पहले कि धार
नागराज के शरीर को छू पाती-
एक अवरोध रास्ते में आ खड़ा
हुआ-
ओह, दादाजी, यह आपने क्या
किया? नागराज को आप देख नहीं
पा रहे हैं: यह शैतान बन चुका है.
आप रास्ते से हट जाइए! वर्ना अगर
इसने आपको पकड़ लिया,
तो हमारे और आपके लिए भी
खतरा बन जाएगा
भारती की जिन्दगी में पहली बार
दादाजी का थप्पड़ पड़ा था-
होश में आओ
भारती!
चटाक

यह मत भूलो कि नागराज कौन है, और तुम कौन हो . नागराज उस राजसी वंश की आखिरी निशानी है, जिसकी सुरक्षा की कुछ जिम्मेदारी वेदाचार्य और उसके वंश पर भी है . और मेरा वंश गद्दारों का नहीं, स्वामिभक्तों का है . जो अपने स्वामी पर खुद हथियार उठाने के बजाय, अपने आपको उन हथियार के सामने कर देते हैं, जो हमारे स्वामी पर उठते हैं .
नागराज पर हमला करने से पहले तुमको वेदाचार्य की लाश पर से गुजरना होगा . और ध्यान रखना, अपने स्वामी की रक्षा के लिए वेदाचार्य तुम्हारी लाश बिछाने में भी नहीं हिचकेगा !
य... यह क्या कह रहे हैं, दादाजी ऐसा तो मैं कभी सोच भी नहीं सकती मैं तो नागराज की मदद ही कर रही हूं . बिना चेकअप के इसके रूप बदलने का पता नहीं चल सकता है . अगर आप इसका असली रूप देख पाते तो...
मैं जो देख पा रहा हूं, वह तुम नहीं देख पा रही सारणी ! ...
...मैं नागराज के रूप को अपनी मानस तरंगों के जरिए देख पा रहा हूं . और नागराज का रूप तो मुझे सामान्य ही दिख रहा है . यानी तुमको दृष्टि-भ्रम हो रहा है .
म... मैं ठीक हूं फिर सबके साथ-साथ मुझको भी अपना रूप राक्षस जैसा क्यों दिख रहा है ?
तुम्हारे शरीर के चारों तरफ मैं सम्मोहन किरणों का एक घेरा महसूस कर रहा हूं नागराज ! ये सम्मोहन किरणें ही बाकी सबके साथ-साथ तुमको भी अपना रूप भयानक बनाकर दिखा रही हैं !
पर दादाजी, सम्मोहन इन्सानों या पशुओं की आंखों पर ही असर करता है . कैमरे की आंख पर नहीं ! फिर टी॰वी॰ पर नागराज शैतान जैसा क्यों नजर आ रहा
हां, मुझे शीशे तक में अपना प्रतिबिम्ब शैतानी ही नजर आ रहा था !

यह घेरा अत्यंत तीव्र सम्मोहन किरणों का इसीलिए यह प्रतिबिम्ब को भी उसी रूप में दिखा रहा है! और रहा टी॰वी॰ कैमरे द्वारा यही भयानक रूप दिखाने का कारण, तो जहां तक मेरी जानकारी है, टी॰वी॰ कैमरा दृश्य और ध्वनि को चुंबकीय तरंगों में बदल कर उनको प्रेषित करता है. ये सम्मोहन किरणें अति तीव्र होने के कारण यह गुण रखती होंगी कि सम्मोहन ऊर्जा को भी चुंबकीय ऊर्जा में बदलकर, सम्मोहित दृश्य को ही प्रेषित कर दें.
ये सम्मोहन घेरा किसी और की नहीं बल्कि तुम्हारी ही सम्मोहन तरंगों द्वारा बना है नागराज! ये तुम्हारी ही सम्मोहन तरंगें हैं!
क्या? ओह, यानी कल्पवक्षी ने जो मेरी थोड़ी सी सम्मोहन शक्ति सोखी थी, उसने उसी का वार मेरे ऊपर कर दिया! पर इस असर को कैसे काटा जा सकता है दादाजी?
तुम्हारे सम्मोहन के बराबर का कोई अन्य सम्मोहन ही इस सम्मोहन घेरे को नष्ट कर सकता है नागराज!
ओह! इसके लिए तो मुझे महात्मा कालदूत की शरण में जाना होगा!
मैं मानवता को बचाने के चक्कर में बहक गई थी दादा जी! मुझे माफ कर दीजिए.
माफी मुझसे नहीं नागराज से मांगो भारती.
उसकी कोई जरूरत नहीं है भारती!
अगर स्वामी मानवता के विनाश पर उतारू हो जाएं तो उसके अनुचरों को भी ऐसे स्वामी की स्वामिभक्ति छोड़ने का पूरा अधिकार है. तुमने भ्रम के कारण जो कुछ भी समझा, उसके अनुसार एकदम ठीक काम किया. गुस्सा होता तो दरअसल मैं तुमसे बहुत खुश हूं. अब काम की बात सुनो. मुझे कल्पवक्षी को खोजने के लिए तुम्हारे ऐप्रेटस की मदद की जरूरत है...
ओह, समझा! पर कल्पवक्षी के पास इतना अधिक तीव्र सम्मोहन आया कहां से?

लेकिन ये संकेत किसी भयंकर खतरे के बारे में ज़रूर है.
में उर्जा खर्च नहीं करनी पड़ेगी!

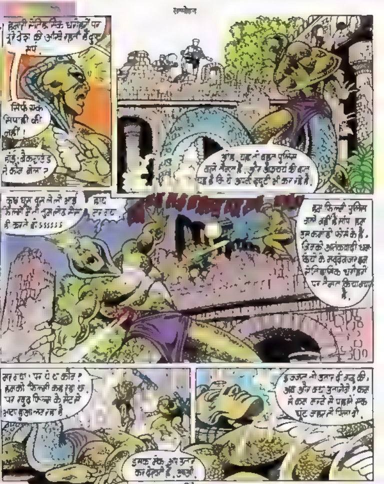
सिर्फ एक सिपाही की नहीं !
कुछ घूस वूस ले लो भाई फिल्मों में तो पुलिस वाले ऐसा ही करते हैं sssss
जिनको आतंकवादी धमकियों के मद्देनजर इन ऐतिहासिक धरोहरों पर तैनात किया गया है.
इज्जत तो उतार दी सबकी,

गोलियां तो इसके बदन के आर-पार हो गई थीं!
तभी तो मैं डर गया! अन्दर अटकी रहतीं तो शायद
खैर! मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है!...
जल्दी तय कर लो, फिर मुझे खुदाई भी करनी है!
ताड़
पत्थरों से टकराकर सिपाहियों की कुछ हड्डियों का टूट जाना निश्चित था-
पर पथरीली दीवार और सिपाहियों के बीच में-
दोनों पुलिसवालों के शरीर हवा में उड़ते हुए पथरीली दीवार की तरफ लपके-
एक चट्टानी जिस्म आ गया-
नागराज के रहते न कोई मरेगा, और न ही कोई विकलांग
अरे! अरे! अच्छी खासी थ्रिलर चलते-चलते यह हॉरर फिल्म कहां से शुरू हो गई! मां ssssss बचाओ!
एक मिनट, अरी! हमने नागराज के बारे में सुना है! पर यह किसी ने नहीं बताया कि उसका मुंह घोड़े जैसा है!

मेरे मुंह की छोड़ो, और अपने चेहरे की चिन्ता करो ... तुम तो मणिधारी और इच्छाधारी सांप हो, और जहां तक मैं जानता हूं, तुम लोग हर जीवित प्राणी में छिपकर रहते हो, ... फिर तुम महानगर जैसी घनी आबादी वाली बस्ती में आकर विनाश क्यों फैला रहे हो ?
माफ करना नागराज भाई! अभी मैं जल्दी में हूं, वैसे भी पता नहीं तुम मेरा यकीन करोगे या नहीं.
इसलिए नागु को अपना काम करने दो, और तुम अपना रास्ता देखो !
तुम्हारा यहां पर आना भी रहस्य पूर्ण है, और तुम्हारा ये ऐतिहासिक स्थल खोदना भी. तुम आखिर ढूंढ क्या रहे हो ? जब तक मुझे अपने सवाल का जवाब नहीं मिलता...
... तब तक तुम पिटने के अलावा और कुछ नहीं करोगे !
आह ! जोरदार वार है नागराज.
मैंने तुम्हारी शक्तियों के बारे में सुना है ...
... पर तुम मेरी शक्तियों के बारे में नहीं जानते ! सिर्फ इतना जान लो कि मणिधारी सर्प की शक्तियों के आगे तुम्हारी दुनिया की कोई भी शक्ति ठहर नहीं सकती.

तुम्हारा वार घातक तो जरूर है; पर तुमको यह जानकर काफी अफसोस होगा कि मुझ पर ऐसे वार असर नहीं करते.
ओ... बदन का छेद अपने आप भर गया. ऐसा तो मैंने एक विदेशी फिल्म में देखा था.
क्या नाम था उसका? क्या नाम था...
टर्मिनेटर 2! यानी विनाशक! तू ठीक समझा नागू, कम से कम तेरे लिए तो मैं नहीं हूं!
ओह! फेफड़ा विष फुफकार! मुझे भी सचमुच चक्कर आ गया. बड़ी तेज गंध है तुम्हारी! तुम या तो कोलगेट टोटल से दिन में दस बार ब्रश किया करो नागराज, और या फिर रोज पचास पैकेट क्लोरेट खाया करो. अगर मेरी सुरक्षा न करती होती तो तुम्हारी सांस की बदबू तो मुझे मार ही डालती
मैं यह बदबू और झेल नहीं सकता, इसीलिए तीव्र मानसिक वार करना ही पड़ेगा! ताकि न तो तू फिर कभी सांस ले पाए, और न ही ये घातक बदबू छोड़ पाए:
नागू की मणि से तीव्र मानसिक तरंगें निकलकर नागराज की गर्दन तोड़ने के लिए आगे लपकीं-
और नागू को चकित हो जाना पड़ा-
कमाल है, तू मेरी मणि का मानसिक वार झेल गया, और फिर भी तेरा सिर सही-सलामत है! पर... तेरा मुंह पीछे से बदलकर इन्सानों जैसा क्यों हो रहा है?
मेरे सिर की रक्षा मेरी इच्छाधारी शक्ति करती है नागू, और मेरी अक्ल... अरे, क्या कहा? मेरी शक्ल इन्सानों जैसी हो रही है; यानी... यानी...

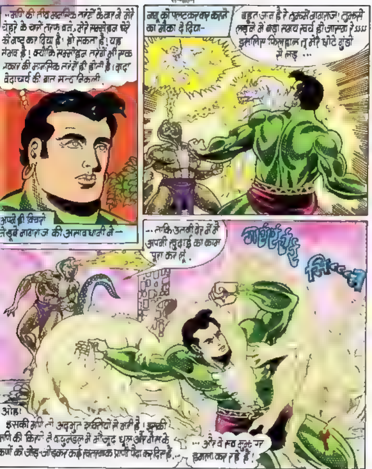
...मणि की तीव्र अलौकिक तरंगों के बाद से मेरे चेहरे के चारों तरफ बने, मेरे सम्मोहन घेरे को नष्ट कर दिया है! हो सकता है! यह संभव है! क्योंकि सम्मोहन तरंगें भी एक प्रकार की मानसिक तरंगें ही होती हैं। गुरुदेव वेदाचार्य की बात सत्य निकली.
अपने ही विचारों में डूबे नागराज की असावधानी ने —
शत्रु को फायदा उठाने का मौका दे दिया-
बहुत जान है रे तुझमें नागराज! तुझसे लड़ने में बड़ा समय खर्च हो जायेगा रे ऽऽऽ इसलिए फिलहाल तू मेरे छोटे गुंडों से लड़ ...
...ताकि उतनी देर में मैं अपनी खुदाई का काम पूरा कर लूं.
ओह!
इसकी मणि तो अदभुत शक्तियों से भरी है। इसकी मणि की किरणों ने वायुमंडल में मौजूद धूल और रेत के कणों को जोड़-जोड़कर कई खतरनाक प्राणी पैदा कर दिए हैं...
... और वे सब मुझ पर हमला कर रहे हैं!

अगर ये मुझे काटने के बाद भी टलते नहीं, तो इन पर विष फुंकार तो शर्तिया बेअसर साबित होगी!
क्योंकि ये जीवित प्राणी तो हैं नहीं!
अब देखना यह है कि इनकी आपस में टक्कर कितनी असरदार साबित होती है.
दोनों 'धूम प्राणियों' की आपस में हुई भीषण टक्कर ने पलभर में ही दोनों प्राणियों को धूल में बदल दिया-
लेकिन उनको वापस जुड़ने में भी उतना ही समय लगा-
आऽऽऽ ह! सारी मेहनत बेकार गई! ये तो वापस जुड़ गए! और... और अब ये मेरा दम घोंटने का प्रयास कर रहे हैं!

इस मुसीबत से तो मैं इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके बच जाऊंगा, पर इनसे लड़ने और बचने के चक्कर में मैं नागू को इस ऐतिहासिक स्थल को क्षति पहुंचाने से रोक नहीं पाऊंगा! जबकि फिलहाल नागू को रोकना ज्यादा जरूरी है!
नागराज की यह चिंता अगले ही पल दूर होती नजर आई-
ओ, यहां पर कौन आ गया मेरी मदद करने के लिए?
मैं आ गया हूं नागराज! दरअसल मैं इसी मायावी सर्प की तलाश में महानगर आया था, ताकि मैं इसकी जगह-जगह विनाश फैलाने की योजना को नाकाम कर सकूं! इसके पीछे मैं काफी दिनों से पड़ा हुआ था। और जो कुछ भी मैजिक शो में हुआ, वह सिर्फ इसलिए ताकि मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करके यह देख सकूं कि मैं इस मायावी शक्तिधारी सर्प से निपटने योग्य हूं भी या नहीं!...
मैं उस सम्मोहन शक्तिवाले दर्शक को भी इसीलिए ढूंढना चाहता था, ताकि अपनी शक्तियों को इतना बढ़ा सकूं कि इस सर्प की पापी योजनाएं खत्म कर सकूं.
पापी योजना ने मेरी है नागराज...
परवोमना रम छूछ! तू भी मानव है और नागराज भी, दोनों एक दूसरे के बात का यकीन न करोगे ही! पर मैं अपना काम पूरा किए बगैर यहां से नहीं जाऊंगा!

इन दोनों की बातों से यह समझ में नहीं आ रहा है कि कौन सही है कौन गलत . पर फिलहाल, जब तक करणवशी और नागू आपस में उलझे हुए हैं, तब तक मुझे इन धूल प्राणियों से छिपटने का रास्ता सोच लेना चाहिए!
पर रास्ता सोचूं तो क्या, जब ये मुझसे जरा दूर हटें . ये तो दूर हटाने पर मुझसे ऐसे चिपक पड़ते हैं, जैसे ये लोहा हों और मैं चुंबक
और इनको खत्म करने का रास्ता ही क्या सकता है . ये तो मानसिक ऊर्जा द्वारा जुड़ी धूल से बने प्राणी हैं ... इन पर तो ... आह ! मिल गया रास्ता .
मैं ही गलती कर रहा था इनको खत्म करने का रास्ता इनको दूर करना नहीं, बल्कि इनको अपने शरीर से और कसकर लिपटने देना है . और एक बार ये सब मेरे शरीर से लिपट जाएं ...
-- तो मैं 'ध्यान योग' से इनकी मानसिक ऊर्जा को अपने मस्तिष्क द्वारा सोख लूंगा ...
... और ये प्राणी धूल बन जाएंगे । और मैं आजाद हो जाऊंगा ...
... अब देखता हूं कि करणवशी और नागू की 'रस्साकशी' में कौन जीत रहा है .

का पलड़ा भारी था-
तूने मेरे सामने आकर बेवकूफी की है कालवती! अब तू ही मुझे बताएगा कि कहां पर छिपा रखा है तूने उनको, बता.
कभी नहीं! वैसे भी तू मुझे ज्यादा देर तक बांध कर नहीं रख सकता क्योंकि अब मेरे पास भी तेरी टक्कर की शक्तियां हैं!
उनके इस्तेमाल का मौका तुझे नहीं मिलेगा कालवती; क्योंकि मैं तेरी इच्छाशक्ति को ही सोख लूंगा, जब तेरे अन्दर बचने की इच्छा ही नहीं होगी, तब तू कर क्या करेगा?
अआह! सचमुच मैं ऐसा ही महसूस कर रहा हूं. मैं इस बंधन से निकलने के लिए कुछ नहीं कर पा रहा हूं! और यह बंधन मुझे जकड़ता जा रहा है. मेरी हड्डियां टूट रही हैं!
तूने-तूने धूम्र प्राणियों को कैसे समाप्त किया?
पर यह स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रही-
सांप, मेरे सांप इसकी किरणों को बाहर निकलने से रोक रहे हैं, यानी...
ठीक वैसे ही जैसे अब मैं तुझे काबू में करूंगा, तेरी शक्तियां सोखकर!
मुझे इसकी 'शक्ति' सोखने का प्रयास करना होगा! यही एकमात्र रास्ता है!

तू मेरी मणि पर सांप लपेटकर इसकी शक्ति को रोकना चाहता है, नागराज . हा हा हा . देख, तेरे सर्पों का मैं क्या हाल करता हूं . मणि की ऊष्मा इनको पलभर में राख बनाकर हवा में उड़ा देगी .
और फिर मैं तुम दोनों की इच्छा शक्ति खींचकर, तुमको इस लायक भी नहीं छोड़ूंगा कि तुम लोग मुझसे लड़ सको !
आआह ! इसकी किरण मेरे दिमाग पर एक मादक असर फैला रही है !
मेरी वार करने की इच्छा समाप्त हो रही है !
इसकी सर्प मणि छीनने का प्रयास करो नागराज , वर्ना यह जल्दी ही हमारी सारी इच्छाशक्ति खींचकर हमको बिना इच्छाशक्ति वाला एक कायर बनाकर ही छोड़ेगा .
मैं क्या कर सकता हूं कल्पवती ? यहां पर तो ऐसी छिपने की भी कोई जगह नजर नहीं आ रही, जहां पर इन मणि किरणों से बचा जा सके ! जो कुछ भी मैं कर सकता हूं , वह इन किरणों से बचने के बाद ही कर सकता हूं .
पर इन किरणों को अपने तक पहुंचने से रोकूं कैसे ? ओह ! सूखी पत्तियों का ढेर !
जिनको शायद यहां पर सफाई करने वाले इकट्ठा करके छोड़ गए हैं ! ये हमारी मदद कर सकते हैं
नागराज के हाथ दो पत्थर उठाकर उनको आपस में तेजी से रगड़ने लगे -
और उनसे फूटी चिंगारियों ने -

तूती पक्षियों के ढेर को सूंघकर, नागू ने नागराज एवं करणवशी के बीच में धुएं की एक दीवार को खड़ा करना शुरू कर दिया-
मेरी अग्नि किरणें, और किसी भी दूसरी बाधा को भस्म कर सकती हैं नागू...
..लेकिन ये धुंआ तो पहले ही 'अग्नि' की बनी हुई है. अब मेरी अग्नि किरणें इस तक नहीं पहुंच सकतीं! और इससे पहले कि तू अग्नि-किरणों का वार बदल पाए...
...मेरी अग्नि गंध विष फुंकार तुमको बेहोशी की दुनिया में पहुंचा देगी.
आःऽऽह... मैं अग्नि की सुरक्षा में होने के बावजूद अपने आपको बेहोश होने से रोक नहीं पा रहा हूं. हालांकि मैं ज्यादा देर तक बेहोश नहीं रहूंगा, पर उतनी देर तक भी अग्नि की सुरक्षा करना आवश्यक है. और इस हालत में मैं सिर्फ एक ही इन्सान पर भरोसा कर सकता हूं! तुम पर नागराज!
क्योंकि तुम इन्सान होने के साथ एक नाग भी हो! नागू का विश्वास मत तोड़ना नागराज

मेरे होश में आने तक इस मणि को अपनी जान से भी ज्यादा संभालकर रखना... वर्ना न जाने कितनी जानें इसकी बलि चढ़ जाएंगी.
ओह! नागू का रूप बदल रहा है! यानी इसने अपना यह भयंकर रूप मणि की शक्ति से बनाया था शायद अपने किसी भी दुश्मन को डराने के लिए. पर 'जानों की बलि' से इसका क्या मतलब है?
शाबाश नागराज! तुमने महानगर को एक बहुत बड़े खतरे से बचा लिया है! अब लाओ, यह मणि मुझे दे दो! मैं इसको नष्ट करने का तरीका जानता हूं
नहीं कायवक्री!
अगर नागू इस मणि से महानगर को नष्ट करना चाहता तो बहुत पहले कर लेता. और इसे मेरे हाथों में तो कभी नहीं देता! क्योंकि इस वक्त मैं उसका प्रतिद्वन्द्वी था. बात कुछ और ही है! और वह बात नागू कुछ ही पलों बाद होश में आने पर बताएगा.
मेरा समय खराब मत करो नागराज!
मणि मुझे दे दे!
और अगर अपने-आप तू मणि नहीं देता...
...तो कायवक्री इसे बलपूर्वक हासिल कर लेगा!
धड़ाक
अब मुझे समझ में आ रहा है कि तू यहां पर नागू की मणि हासिल करने आया था!
मेरी मदद करने नहीं! पर इस वक्त मणि मेरे हाथ में है!
...और यह मेरी मानसिक तरंगों को भी शक्तिशाली मानसिक वार में बदल सकती है!
अब मैं तुझे भागने नहीं दूंगा

अब मैं यहां पर रुककर अपनी उस शक्ति को बर्बाद नहीं करूंगा, जो मैंने बड़ी मेहनत से इकट्ठी की है. मुझे अपनी योजना पर अमल शुरू करने के लिए थोड़ी सी और मानसिक शक्ति की जरूरत है, जो मुझे इस मणि से मिल जाती!
पर कोई बात नहीं, मैं इस शक्ति को एक दूसरी जगह से प्राप्त कर लूंगा. और उसके बाद तू देखेगा कालवज्री की योजना. इस दुनिया के साथ-साथ मेरा गुलाम बनकर!
ओह! यह अपनी मानस तरंगों के सहारे उड़ सकता है! मैं इसका पीछा नहीं कर सकता. पर इतनी भीषण शक्तियां इसमें आईं कहां से?
ये तुम्हारे महानगर के निवासियों की वह असीमित इच्छा शक्ति है नागराज, जिसे कालवज्री धीरे-धीरे करके चूस रहा है.
ओ तुम होश में आ गए नागू. पर कालवज्री महानगर की जनता की इच्छा शक्ति कैसे चूस सकता है?
ऐसी मणियों के सहारे, जिनको उसने मेरे परिवार के अन्दर मणिधारी सर्पों से हासिल कर लिया है, और जो इस वक्त महानगर के पांच कोनों में धरती के नीचे दबी हुई हैं!
मैं इन मणियों को ढूंढने के लिए ही खुदाई कर रहा था, परन्तु यहां पर कोई मणि नहीं है, अब वे मणियां कहां दबी हैं, उनकी सही स्थिति को कालवज्री के अलावा और कोई नहीं जानता!
मुझे पूरी बात शुरू से बताओ नागू! कालवज्री कौन है, और उसका तुम मणिधारी नागों से सम्पर्क कैसे हुआ?

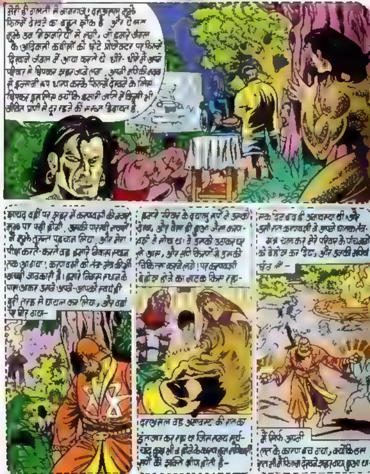
मेरी ही गलती से ... ! दरअसल मुझे फिल्में देखने का बहुत शौक है और ये शौक मुझे उन शिकारियों से लगा, जो हमारे जंगल के आदिवासी कबीलों को छोटे प्रोजेक्टर पर फिल्में दिखाने जंगल में आया करते थे धीरे-धीरे मैं अपने परिवार से छिपकर ... जाने लगा ... इन्सानी रूप धारण करके फिल्में देखने के लिए छिपकर इसलिए क्योंकि हमारी जाति में किसी भी जीवित प्राणी से दूर रहने की ... हिदायत है।
शायद वहीं पर ... में कालदूत की नजर मुझ पर पड़ी होगी, उसकी ... नजरों ने मुझे तुरन्त पहचान लिया, और मेरा पीछा करते-करते वह हमारे निवास स्थान तक आ गया; कालदूत को मंत्र-तंत्र की भी अच्छी जानकारी है। हमारे निवास स्थान के पास आकर उसने अपने-आपको स्वयं ही बुरी तरह से घायल कर लिया, और वहां पर गिर गया-
हमारे परिवार के दयालु सदस्यों ने उसको देखा, और वैसा ही हुआ जैसा कालदूत ने सोचा था। वे उसको उठाकर घर ले आए, और मणि किरणों से उसकी चिकित्सा करने लगे! पर कालदूत बेहोश होने का नाटक किए रहा-
... दिन बाद ही अमावस्या थी और उसी रात कालदूत ने अपने घातक मंत्र-मंत्र चलाकर मेरे परिवार के पांचों को बेहोश कर दिया, और उनकी मणियां छीन लीं-
दरअसल वह अमावस्या की रात का इन्तजार कर रहा था जिस समय सूर्य-चंद्र ... न होने के कारण ... मणियों की शक्ति क्षीण होती है-
मैं सिर्फ अपनी ... के कारण बच गया, क्योंकि उस ... मैं फिल्म देखने शहर गया हुआ था-

लेकिन जब मुझे सारी बात का पता चला तो मैं तुरन्त काणवक्षी की तलाश में निकल पड़ा क्योंकि मणियों न होने के कारण मेरा पूरा परिवार शक्तिहीन हो गया है, और वे सब कभी भी जंगली जानवरों का शिकार बन सकते हैं। हमारी मणियों में किसी की भी इच्छाशक्ति सोख सकने की अद्भुत क्षमता है, और काणवक्षी उसी के सहारे इतना शक्तिशाली बन गया है।
मामला खतरनाक है! अगर सिर्फ महाबली मणियों को थोड़ी सी इच्छाशक्ति उसे इतना शक्तिशाली बना सकती है, तो जब उसकी शक्ति और बढ़ेगी, तब वह क्या करेगा! क्या हो सकती है उसकी योजना?
यह तो पता नहीं नवराज! पर काणवक्षी को रोकने का एक ही तरीका है पांचों मणियों को ढूंढकर उनको अपने कब्जे में ले लेना. मणियों की स्थिति का पता सिर्फ काणवक्षी ही जानता है।
काणवक्षी को अभी भी थोड़ी सी शक्ति की जरूरत है. और वह शक्ति उसे जल्दी चाहिए; वह धीरे-धीरे मिलने वाली इच्छा शक्ति का इन्तजार नहीं कर सकता! क्योंकि अब उसे तुमसे और मुझसे खतरा है।
यह शक्ति वह 'एक दूसरी जगह से प्राप्त करने की बात कर रहा था! वह जगह कौन सी हो सकती है?
काणवक्षी किसी सम्मोहन धारी इन्सान का जिक्र कर रहा था. शायद वह उसी को ढूंढेगा ताकि उसकी सम्मोहन शक्ति को छीनकर अपनी इच्छा को पूरा कर सके. पर वह इन्सान है कौन?
मैं उसे जानता हूं! आओ! हम अपनी योजना बनाते हैं।

करणवशी की राज की तलाश थी-
यह है वह ऐतिहासिक स्थल जहाँ पर आज कुछ देर पहले एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा तोड़-फोड़ की गई!
जो लगभग एक घंटे के बाद भारती न्यूज चैनेल के लिए सजीव प्रसारण कर रहा था-
पहरे पर तैनात कर्मियों के अनुसार वह एक बाबामानव था, जिसे नागराज ने रोकने की कोशिश की! परन्तु...
अरे, वही है, यह तो वही है! मैं तो शहर के हालात जानने के लिए समाचार देख रहा था; पर मुझे क्या पता था कि इसको मानस जाल द्वारा ढूंढने से पहले ही यह मेरी आँखों के सामने आ खड़ा होगा.
... अब देर करना उचित नहीं है! मंजिल मेरी आँखों के सामने है!
राज बेखबर था कि करणवशी की नजर उस पर पड़ चुकी है -
और जब हमारी न्यूजटीम यहाँ पर पहुँची तो यहाँ पर कोई भी नहीं था, नागराज भी अपने विचार देने के लिए उपलब्ध नहीं था. हम इसके आगे की जानकारी भारती न्यूज चैनेल पर देते रहेंगे.
जानकारी देने की आवश्यकता नहीं है...
... अब तुम्हारे दर्शकों को जो जानना है, वह वे खुद ही देख लेंगे!
करणवशी! तु... तुम यहाँ पर?
और तुम कुछ कैसे रहे हो?

मुझे छोड़, परन्तु अपनी जिन्दगी को इस व्यर्थ काम में क्यों खराब कर रहा है? मेरे पास तो वह अद्भुत शक्ति है, जो जिन्दगियों पर राज कर सकती है!
वह तो आप जैसे महान लोग ही करते हैं श्री कल्पवृक्षी जी, पर जब आप सामने आ ही गए हैं तो एक इन्टरव्यू...
दूंगा, जरूर दूंगा! पर स्कोलन में तुझे अपने साथ ले जाकर!
आऽऽह!
राज!
राज का बदन पलभर के लिए एक चमकदार रोशनी से घिर गया—
और किसी के कुछ समझ पाने से पहले ही बेसुध राज को कल्पवृक्षी अपने साथ ले जा रहा था—
?
कैमरामैन ने तुरन्त खबर, ऑफिस में पहुंचा दी—
मैडम, गजब हो गया! कल्पवृक्षी मिस्टर राज को उठा ले गया है, पुलिस की आंखों के सामने से, आप... आप तुरन्त कुछ कीजिए.
ओह! यह क्या हुआ? ... मैं कुछ करती हूं, ओ० के०!
क्या खबर है आन्टी?
राज को कल्पवृक्षी उठा ले गया है.
गुड, वेरी गुड.

करणवशी, 'राज' को महाबवार के पास के एक एकांत स्थान तक ले आया था-
तू अपने-आप में एक रहस्य है मानव, तेरे अन्दर भीषण सम्मोहन शक्ति है, और तू उसका प्रयोग भी करता है परन्तु फिर भी अपना जीवन एक मामूली सूत्रधार बनकर जीना चाहता है.
...खैर मुझे क्या? मुझे तो तेरी वह सम्मोहन शक्ति चाहिये है, जो लाखों मानवों की सम्मिलित इच्छाशक्ति के बराबर है. उसको पाकर मेरी तांत्रिक ऊर्जा संपूर्ण हो जाएगी.
और फिर शुरू होगी, दुनिया को गुलाम बनाने की मेरी योजना
करणवशी की मानस तरंगें राज की आंखों के रास्ते से उसकी सम्मोहन शक्ति को खींचने लगीं-
पर कुछ मिनटों तक यह सिलसिला चलने के बाद करणवशी चौंक उठा-
...अब जरा इधर भी देख लो करणवशी, तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है
कौन? य... यहां पर कौन आ गया?
मैं नागराज, और ये रहीं तुम्हारी वे मणियां, जिनके बूते पर तुम न जाने कौन सी शैतानी योजना बुन रहे थे.
न... तूने ये मणियां कैसे ढूंढीं? कैसे पता लगा तुझे इनकी स्थिति का?
मैं बताता, दरअसल हम वो नहीं हैं ऽऽऽ जो दिखते हैं. हम नाग हैं, नाग, और ये रूप हमें अपनी शक्ति द्वारा बनाए हुए थे. समझे जोगी, नहीं समझे?
हैं?

हमको पता था कि तुम गोह को ही ढूंढने जाओगे ! अतिरिक्त सम्मोहन शक्ति पाने के लिए ; अब ये मत पूछना कि यह हमको कैसे पता था ;
अपनाते ! पर तुम आगए। और 'राज' को अपने साथ ले आए
अब जिस वक्त तुम राज यानी नागू का दिमाग टटोलकर सम्मोहन शक्ति खींच रहे थे, नागू तुम्हारे दिमाग को टटोलकर मणियों की स्थिति का पता लगा रहा था, और मुझे मानसिक संकेत प्रेषित करता जा रहा था ;
और मैं मणियों को उन- उन स्थानों से खोदकर निकालता जा रहा था, जहां पर तुमने इनको दबाया हुआ था . अब तुम इन मणियों का इस्तेमाल किसी की भी शक्ति खींचने के लिए नहीं कर सकते ! तुम्हारा खेल खत्म हो गया है करणवशी !
मेरा खेल अब शुरू होगा महाराज ; क्योंकि मुझे जरूरत भर शक्ति मिल गई है .
और उसमें से एक रोशनी का गोला निकलकर आकाश पर छाने लगा-
देख मेरा खेल . मेरी उस योजना की शुरुआत देख, जिसके लिए मैंने इतना सब किया !
करणवशी की आंखों में रोशनी का एक चमकता गोला फूटकर हवा में उछला-
दुनिया पर छा जाएगा ! और जो असर नागमणियां महा-नगरों को लूट कर रही थी, वह असर यह सारी दुनिया के नागरिकों पर करेगा . सबकी इच्छा शक्ति खींचकर मेरे अन्दर स्थानांतरित कर देगा . और मुझे बना देगा इस दुनिया का शहंशाह !

देख, अभी से मेरे शरीर में मानसिक ऊर्जा भरनी शुरू हो गई है। भीषण ऊर्जा खींच रही है मेरे शरीर को।
इसके शरीर से निकलती मानसिक ऊर्जा की भीषण तरंगें मेरे दिमाग को ऐसे थपेड़े दे रही हैं, जैसे कोई नाव समुद्री तूफान के थपेड़े को झेलती है ... पर इसको रोकना ही होगा नागराज! रोकना ही होगा!
अब हम इसकी शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकते, नागराज. अब तो मणि की शक्ति भी इसके सामने कुछ नहीं है.
यह असंभव है नागराज! इसके सम्मोहन जाल को कोई ऐसा ही विशाल विपरीत सम्मोहन जाल ही नष्ट कर सकता है और ऐसा सम्मोहन जाल, जो पूरी दुनिया पर फैल सके, वह शायद ब्रह्मांड में किसी के पास नहीं है!

सम्मोहन जाल! हां एक रास्ता है नागू! हर नाग के अन्दर सम्मोहन होता है! यानी नागों का एक विशाल जाल, सम्मोहन जाल की तरह ही काम करेगा!
पर इतने लाखों-करोड़ों नाग आएंगे कहां से नागराज?
हालांकि इससे मैं एक बेजान लाश की तरह रह जाऊंगा! पर यह खतरा मुझे उठाना ही होगा!
मेरे शरीर से नागू! मेरे शरीर से!
नागराज ध्यान मुद्रा में बैठ गया! अब उसका लक्ष्य सिर्फ एक था-
अपने सांपों को शरीर से निकालकर पूरी पृथ्वी पर एक विपरीत सम्मोहन नाग जाल फैलाने के साथ-साथ अपने शरीर में सांपों को द्विगुणित भी करते रहना-
ताकि जाल की सततता टूटने न पाए-
परन्तु यह कठिन प्रक्रिया, नागराज के शरीर में से आवश्यक जीवन द्रव्यों को भी खत्म करती जा रही थी, जो नागराज को जीवित रखने के लिए आवश्यक थे-

सर्पजाल, उतनी ही तेजी से फैल रहा था, जितनी तेजी से क्रूरवशी का सम्मोहन जाल अपना आकार बढ़ा रहा था-
य...यह क्या हो रहा है? इतने सारे सर्प कहाँ से आ रहे हैं? ये-ये तो मेरे सम्मोहन जाल की संधियों को तोड़ रहे हैं!
मेरा जाल नष्ट हो रहा है! सिमट रहा है। मेरी योजना खाक में मिल रही है!... नागराज! यह सर्पजाल तू बिछा रहा है!
तेरे सर्पजाल ने सिर्फ मेरे सम्मोहन जाल को ही नहीं, मेरी जिन्दगी के मकसद को भी नष्ट कर दिया है। और इसके लिए अब मैं तुझे नष्ट कर दूंगा!
नागराज की तरफ बढ़ते, क्रूरवशी के उस घातक वार को-
बाबू ने अपने शरीर पर झेल लिया-
आऽऽऽऽ
बचो नागराज!
कैसे बचेगा नागराज? पहला वार तो तूने झेल लिया! पर अब उसे कौन बचाएगा?
सचमुच! मुझमें तो अब हिलने की भी शक्ति नहीं है। क्रूरवशी जैसे शक्तिशाली का मुकाबला अब मैं कैसे करूंगा! नहीं! मुझे हार नहीं माननी है! नहीं माननी है!

केंचुए की तरह रेंगता नागराज का शरीर इधर-उधर रेंगने लगा-
हा हा हा ! अब तो मुझे इस खेल में मजा आ रहा है ! ... तू कीड़ों की तरह रेंग-रेंगकर मरने से बचना चाहता है। पर तेरी चाल तो घोंघे से भी सुस्त है ! ... करणवशी के वार से चीता नहीं बच सकता तो घोंघा क्या बचेगा !
मैं बच नहीं रहा हूं, करणवशी ! मैं तेरी मौत का सामान इकट्ठा कर रहा हूं !
यहां पर कंकड़-पत्थरों के अलावा और है क्या ? क्या तू मुझे पत्थर मार-मारकर मारेगा ? हा हा हा !
पत्थर ही समझो ! कुछ नादान पत्थर और रत्नों में फर्क नहीं समझते हैं ! ...
... मैं उन सर्प मणियों को इकट्ठा कर रहा था, जिनको मैं यहां पर लेकर आया था !
और मेरे अन्दर अभी भी इतनी मानसिक ऊर्जा मौजूद है ...
... कि जब वे इन पांच मणियों से होकर गुजरेगी, तो इतनी शक्तिशाली हो जाएगी कि तुझे धूल चटा सके !

रही सही कसर मैं पूरी कर देता हूं, नागराज! और इससे पहले कि ये संभल पाए, मैं अपनी मणि की मदद से इसकी शक्ति भी खींच लेता हूं! कम से कम वह सम्मोहन शक्ति तो वापस मिले जो इसने मुझसे छीनी है!
नागों के शरीर में वापस आते ही नागराज की शक्ति तेजी से वापस आने लगी—
आऽऽऽ ह! अब कुछ चैन पड़ा!
अब मैं इस कलावती की आंखों की पुतलियों में एक-एक विशेष सूक्ष्म सर्प बिठा दूंगा! जो इसकी सम्मोहन शक्ति को बाहर निकलने से पहले ही नष्ट करते रहेंगे!...
—और फिर इसे जेल पहुंचाने का इंतजाम करूंगा।
एक जेल में मुझे भी जाना है नागराज!
तुम्हारे शरीर की जेल में। हालांकि इसके लिए मुझे मणि को त्यागना होगा! पर मैं इसके लिए तैयार हूं!
पर तुम मेरे शरीर में क्यों रहना चाहते हो नागू?
एक तो मुझे लाखों करोड़ों दोस्त मिलेंगे! और दूसरे तुम शहर में रहते हो! फिल्में देखने को खूब मिलेंगी!
फिल्में! हा हा हा! तुम्हारा फिल्मी भूत शायद जिन्दगी भर नहीं उतरेगा। मैं तैयार हूं! पर इससे पहले तुमको अपने परिवार तक मणियां पहुंचाकर आना होगा!
ओ० के० सर!